Surya Ashtakam

आठ श्लोकों का यह सूर्याष्टक, श्री कृष्ण और उनकी द्वितीय पत्नी जम्बावती के पुत्र साम्ब के
द्वारारचित है।
साम्ब के द्वारा साम्ब पुराण की रचना हुई, सूर्याष्टक उसी साम्ब पुराण का एक भाग है।
अथ श्री सूर्याष्टकम्
आदि देव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमो ऽस्तु ते।१।
हे आदिदेव! तुम्हें नमस्का रहै, है हे भास्कर! आप मुझ पर प्रसन्न हों ।होंहे दिवा कर (दिन प्रारंभ
करने वाले) तुम्हें नमस्का रहै, प्रभा कर (उजाला करने वाले) तुम्हें नमस्कार है।।
सप्ता श्वथमा रूढं प्रचण्डं कश्यपा त्मजम्।
श्वेत पद्मा धरं देवं तं सूर्यं प्रणमा म्यहम्।२।
सात अश्वों (घोड़ों)ड़ों वाले रथ पर आरूढ़, प्रचंड तेज वा ले, कश्यप ऋषि के पुत्र, हाथ में श्वेत
कमल धारण करने वाले हे सूर्यदेव! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।।
लोहितं रथमा रूढं सर्वलो क पितामहम्।
महापा पहरं देवंतं सूर्यं प्रणमा म्यहम् ।३।
लाल रंग के रथ पर विराजित, सभी लोकों के पिता महकहला ने वा ले, बड़े पापों को हरने वाले हे सूर्य देव, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।।
त्रैगुण्यश्च महा शूरंब्रह्मा वि ष्णु महेश्वरम्।
महा पापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमा म्यहम् ।४।
जो तीनों गुणों (सत, रज, तम) के स्वामी हैं, जो साक्षात् ब्रम्हा विष्णुऔर महेश (शिव) हैं,हैं बड़े
पापों को हरने वाले हे सूर्यदेव! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।।
बृहि तं तेजः पुञ्जच वायु आका शमेव च।
प्रभुत्वं सर्वलो का नां तं सूर्यं प्रणमा म्यहम् ।५।

सूर्या ष्टकम् अर्थ सहित

तं सूर्यं लो ककतारं महा तेजः प्रदी पनम्।
महा पा प हरं देवं तं सूर्यं प्रणमा म्यहम् ।७।

हे सूर्य देव! आप ही जगत की रचना करने वाले हो , आपका तेज महा दीप्ति करता है,
महा पापों को हरने वाले हे सूर्य देव! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।।

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञा नवि ज्ञा नमो क्षदम्।
महा पा पहरं देवं तं सूर्यं प्रणमा म्यहम्।८।

हे सूर्यदेव! आप जगत के नाथ (स्वामी) हैं, आप ज्ञान-विज्ञान और मोक्ष के दाता हैं,
महापापों
को हरने वाले हे सूर्य देव! मैं आपको नमस्का र करता हूँ।।

फलश्रुतिः -

सूर्या ष्टकं पठेन्नि त्यं ग्रहपी डाप्रणाशनम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं दारि द्रो धनवा न् भवेत् ।९।

फलश्रुति - जो सूर्याष्टक का नित्य पाठ करता है,उसके ग्रह दोषों का नाश हो ता है, बाँझ
और
निपुत्रों को पुत्र की प्राप्ति होती है, दरिद्र धनवा न हो जाता है।।

अमि षं मधुपा नंचयः करो ति रवेर्दिने।
सप्तजन्मभवेत् रो गि जन्मजन्म दरि द्रता ।१०।

जो सूर्य की पूजा के दिन मांस या मदिरा का सेवन करता है, वह सात जन्मों के लिए
रोगी हो
जाता है, और प्रत्येक जन्म में वह दरिद्र होता है।।

स्त्री -तैल-मधु-मांसा नियेत्यजन्ति रवेर्दि ने।
न व्याधिशोक दारि द्र्यं द् ‘यंसूर्य लोकं च गच्छति ।११।

जो सूर्य के दिन स्त्री , तेली य भोजन, मदिरा और मांस का त्याग करता है, उसे कोई रोग,
दुः ख और दारिद्र (गरीबी) नहीं होते और मरणो परांत वह सूर्य लोक को जाता है।।

।इति श्री सूर्या ष्टकं सम्पूर्णम्